कौशल, सहयोगात्मक माहौल में काम करने की क्षमता, विषय का ज्ञान, संगठनात्मक और परियोजना प्रबंधन में कौशल, वेब डिजाइन एवं ऑनलाइन शिक्षा प्रबंधन प्रणालियों के साथ परिचित होना और ऑनलाइन पाठ्यक्रम बनाने की क्षमता होना जरूरी है। करिकुलम डिजाइनर के लिए आपके पास कम से कम स्नातक की डिग्री होना जरूरी है। सबसे प्रासंगिक डिग्री शिक्षा, शिक्षण डिजाइन या शिक्षण प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हैं। शिक्षा में स्नातक के कोर्स में अक्सर शिक्षण और मनोविज्ञान जैसे पाठ्यक्रम शामिल होते हैं। जबकि अनुदेशात्मक डिजाइन या तकनीकी कार्यक्रम पाठ्यक्रम डिजाइन, वेब डिजाइन और मल्टीमीडिया टेक्नोलॉजी जैसे पाठ्यक्रम में प्रशिक्षण प्रदान करते हैं।

क्वालिटी एनालिसिस : इसमें प्रोसेस फलो एवं प्रोग्राम में गुणवत्ता की जांच की जाती है।

सॉफ्ट स्किल : इसमें कहानी कहने की कला, अलग हट कर सोचने की कला, रचनात्मकता, संचार एवं पारस्परिक कौशल शामिल है।

कोर्सेस

भारत में यह क्षेत्र अभी भी प्रारंभिक चरण में है। भारतीय-उप महाद्वीप में अब तक किसी भी विश्वविद्यालय में ऐसा पाठ्यक्रम नहीं हैं, जो विशेष रूप से वी.आर./एआर उद्योग में कैरियर शुरू करने में मदद कर सके। हालांकि कोर्सेरा और उडेमी आदि जैसे कुछ ऑनलाइन पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं, जिन्हें छात्र चुन सकते हैं।

अगर हम ग्राफिक डिजाइनिंग कोर्स जैसे व्यक्तिगत फ़ील्ड देखें, तो छात्र नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन, आईडीसी, आईआईटी बॉम्बे, पर्ल अकादमी, (दिल्ली, मुंबई, जयपुर), निफ्ट, दिल्ली और मेईर एमआईटी इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन, पुणे जैसे प्रसिद्ध संस्थान चुन सकते हैं।

एनआईआईटी, एसएनडीटी विश्वविद्यालय (मुंबई), सिम्बॉयोसिस विश्वविद्यालय (पुणे) और पुणे विश्वविद्यालय करिकुलम डिजाइनर पाठ्यक्रम पेश करते हैं। सॉफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में करियर शुरू करने के लिए, आपको बीई / एमई / बीटेक/ एमटेक जैसे डिग्री कोर्स को चुनना चाहिए। सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग में ये अंडर ग्रेजुएट और पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स भारत में मौजूद कई कॉलेजों और संस्थानों से किए जा सकते हैं।

- युवराज के.शर्मा

सह-संस्थापक एवं डायरेक्टर, कॉम्पैनियंस

INTERVIEW

पिछले अनुभवों से आगे बढ़ने का प्रयास किया

बांदा की रहने वाली शुभांगी शुक्ला ने पीसीएस- 2015 की परीक्षा में बेहद सम्मानित एसडीएम पद को प्राप्त किया और 13वीं रैंक प्राप्त की। इसके साथ ही उन्होंने महिला वर्ग में यूपीपीसीएस में टॉप भी किया। यूपीपीसीएस टॉपर शुभांगी शुक्ला के साथ उड़ान टीम की बातचीत के अंश प्रस्तुत हैं-

शुभांगी शुक्ला

एसडीएम

यूपीपीसीएस परीक्षा के लिए भाषा की कोई भूमिका नहीं होती, बल्कि आपके द्वारा दिए गए सही उत्तरों की भूमिका अतिमहत्वपूर्ण होती है। इसलिए हम जिस भी भाषा में उत्तर दे रहे हों, उसमें हमारा सहज महसूस करना आवश्यक है, जिससे कि सरलता से परीक्षा में अपनी बात को समझा सकें...

शुभांगी जी आपकी शैक्षणिक पृष्ठभूमि क्या है?

मैं बांदा की रहने वाली हूं और मेरी शुरुआती पढ़ाई बांदा से हुई थी। इसके बाद मैंने इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से दर्शन शास्त्र से पोस्ट ग्रेजूएट की। अन्य लोगों की तरह मैं भी सामान्य विद्यार्थी रही। मैंने झांसी से हाईस्कूल की परीक्षा को पास किया। यह एक आईसीएससी बोर्ड का कॉलेज है। हाईस्कूल की परीक्षा के बाद मेरा एडमिशन यूपी बोर्ड के कॉलेज, एम.एम.गर्ल्स इंटर कॉलेज झांसी में हुआ। यहां से इंटर करने के पश्चात् मेरी रुचि इतिहास, अर्थशास्त्र और दर्शनशास्त्र जैसे विषयों की तरफ बढ़ रही थी। इसलिए मैंने इन विषयों को अपनी बीए की परीक्षा में शामिल कर इलाहाबाद से स्नातक पूर्ण किया। इसलिए मैंने पोस्ट ग्रेजुएशन में दर्शनशास्त्र को अपनी पढ़ाई का आधार बनाया और पीसीएस की मुख्य परीक्षा में इस विषय को चुना।

यूपीपीसीएस की परीक्षा में आपकी क्या रणनीति रही ?

मैं बहुत ज्यादा नहीं पढ़ती थी, बल्कि नियमित तौर पर हर दिन दो से तीन घंटे ही पढ़ती थी। साथ ही परीक्षा के दिनों में 12 से 14 घंटे पढ़ाई में देती थी। मेरा मुख्य जोर इस पर रहता था कि सही उत्तर कैसे लिखा जाए और यह उत्तर दूसरों से अलग एवं प्रभावी भी हो। इसके लिए मैंने स्वयं के बनाए नोट्स पढ़े और सही उत्तर लिखने का अभ्यास किया। क्योंकि स्वयं के बनाए नोट्स परीक्षा के दौरान कम समय में पूरा कोर्स दोहराने में मदद देते हैं।

आपका साक्षात्कार अनुभव कैसा रहा ?

मेरा साक्षात्कार बहुत अच्छा रहा, मैं अपने साक्षात्कार से संतुष्ट थी। क्योंकि मैंने 70 से 75 प्रतिशत प्रश्नों के उत्तर दिए। साक्षात्कार के दौरान लोगों को साधारण और सभ्यरूप में प्रस्तुत होना चाहिए। साक्षात्कार के दौरान जो लोग आपके सामने बैठे है, उन्हें बहुत अनुभव होता है। वह आपके ज्ञान के अलावा कम शब्दों में आपके ज्ञान प्रस्तुत करने के तरीके को भी जानने की कोशिश करते हैं।

परीक्षा के दौरान दबाव से बचने के लिए आपने क्या किया?

इसके लिए मैं साधारणतः सब टीवी के प्रोग्राम तारक मेहता का उल्टा चश्मा को देखती थी। यह सीरियल पूरे दिन मुझे तनाव से दूर रखता था।

सिविल सर्विस के अभ्यर्थियों से आप क्या कहना चाहेंगी?

मैं दूसरों से प्रतिस्पर्धा नहीं करती थी, बल्कि स्वयं के पिछले अनुभवों और कार्यों से सीखती एवं और बेहतर करने का प्रयास करती थी। इसलिए मेरा मानना है कि हर किसी को अपनी रणनीति को अपनाना चाहिए। क्योंकि हर किसी की क्षमता अलग-अलग होती है। इसलिए अभ्यर्थी अपनी क्षमताओं को पहचानें और सही दिशा में प्रयास करें।

मेरा मुख्य जोर इस पर रहता था कि सही उत्तर कैसे लिखा जाए और यह उत्तर दूसरों से अलग एवं प्रभावी भी हो।